रचनात्मकतावाद की अवधारणा

(Concept of Constructivism)

रचनात्मकतावाद **'Constructivism'** अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अध्ययन का एक नवीन दृष्टिकोण है। पूर्व प्रचलित आदर्शवाद एवं यथार्थवाद की तुलना में यह दृष्टिकोण विश्व राजनीति की जाँच सामाजिक धरातल पर करने को प्रमुखता प्रदान करता है। रचनात्मकतावादियों का दावा है कि अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की सही समझ केवल भौतिक सीमाओं के अंतर्गत होने वाली तर्कसंगत अन्योन्यक्रियाओं से ही नहीं प्राप्त की जा सकती है, जो कि यर्थाथवादियों का आग्रह है और न ही इसे संस्थागत सीमाओं के अन्तर्गत परखने से कार्य पूर्ण हो सकता है, जैसा कि आदर्शवादियों का मत है। वास्तव में, रचनात्मकवादियों के अनुसार सम्प्रभु राज्यों के मध्य बनने वाले सम्बन्ध केवल उनके स्थिर राष्ट्रीय हितों पर ही आधारित नहीं होते हैं वरन उन्हें लम्बी अवधि के दौरान बनी अस्मिताओं के प्रभाव में उठाये जाने वाले कदमों के प्रारूपों पर विचार करके समझना पड़ता है। रचनात्मकवादी अपना ध्यान अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के स्तर पर विद्यमान संस्थाओं पर केन्द्रित करते हुए अंतर्राष्ट्रीय कानून, राजनय एवं सम्प्रभुता को महत्त्व देते हैं। शासन व्यवस्थायें भी उनके लिए महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि वे भी विनियमकारी एवं विधेयक संरचनाएँ उत्पन्न करती हैं। उनके हाथों एक सम्पूर्ण सामाजिक जगत की रचना होती है जिसकी सहायता से राज्य के व्यवहार एवं आचरण के तात्पर्यों का अंदाजा लगाया जा सकता है।

रचनात्मकवाद का सिद्धान्त भौतिक आयामों की उपेक्षा नहीं करता किन्तु वह उनके साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को समझने के लिए सामाजिक आयामों को भी जोड़ देता है। इसके अंतर्गत जब संस्थाओं की चर्चा की जाती है तो उसका तात्पर्य केवल सांगठनिक ढाँचा ही नहीं होता वरन् सामाजिक स्तर पर अस्मिताओं एवं हितों की एक सम्पूर्ण स्थिर संरचना भी होती है। एक ऐसी संरचना जिसमें साझी समझ, साझी अपेक्षाएँ एवं सामाजिक ज्ञान अंतर्निहित होता है। रचनात्मकवादी संस्थाओं को मूलतः एक संज्ञानात्मक अस्तित्व की भाँति देखते हैं जिन्हें अपने कर्त्ताओं के विचारों की सीमाओं के दायरे में ही रहना पड़ता है। संस्थागत संरचनाओं के मानकीय प्रभाव के साथ-साथ रचनात्मकवाद परिवर्तित मानकों एवं अस्मिताओं एवं हितों के मध्य बने सूत्रों की जाँच भी करता है। क्योंकि राज्य एवं अन्य कर्त्ताओं की गतिविधियों के कारण संस्थाओं में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है, इसलिए रचनात्मकतावाद संस्थाओं एवं कर्त्ताओं को परस्पर अनुकूलन करते रहने वाले अस्तित्वों की भाँति देखता है।

इस विवेचना से यह प्रतीत हो सकता है कि एक सैद्धान्तिक रवैये के तौर पर रचनात्मकवाद पर अमल करना अत्यधिक दुरूह होगा, किन्तु वास्तव में, राज्यों के व्यवहार का अनुमान लगाने के लिए किसी विशेष सामाजिक संरचना को चुनने की सिफारिश करने के स्थान पर इस दृष्टिकोण के आधार पर किसी एक विशिष्ट परिस्थिति में विद्यमान संरचना की जाँच

Scanned with CamScanner

पड़ताल करके उसके विशिष्ट दायरे में राज्य के व्यवहार का अनुमान लगाया जा सकता है। यदि यह अनुमान गलत सिद्ध होता है तो इसका अर्थ यह हुआ कि उस संरचना को भली-भाँति समझा नहीं गया है अथवा वह अचानक बदल गयी है। जैसा कि यदि यथार्थवादी कहते हैं कि अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में अराजकता व्याप्त है तो रचनात्मकतावादी कहेंगे कि उनकी यह धारणा हॉब्स द्वारा प्रतिपादित 'प्रकृत अवस्था' के आइने में अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को देखने से उपजी है। इस प्रकृत अवस्था का निष्कर्ष सामाजिक सम्बन्धों की एक विशिष्ट संरचना से निकाला गया है जो कि वर्तमान में परिवर्तित हो चुकी है।

संरचनावपादियों की मान्यता के अनुसार अंतर्राष्ट्रीय संस्थायें विनियमन भी करती है और विधेयक भूमिका भी निभाती हैं। विनियमनकारी भूमिका का अर्थ है कि कतिपय विशेष ढंग के व्यवहारों एवं आचरणों को मान्य अथवा प्रतिबंधित करना है जबकि विधेयक भूमिका का तात्पर्य है कि किसी व्यवहार अथवा आचरण को परिभाषित करते हुए उसे एक निश्चित तात्पर्य से सम्पन्न करना। राज्य उनकी दृष्टि में एकत्र निगमित (कॉरपोरेट) की अस्मिता है। वह अपने बुनियादी लक्ष्यों यथा-सुरक्षा, स्थिरता, मान्यता एवं आर्थिक विकास आदि का निर्धारण करता है किन्तु इन लक्ष्यों की प्राप्ति सामाजिक अस्मिताओं पर निर्भर है जबकि राज्य स्वयं को अन्तर्राष्ट्रीय समाज के संदर्भ में जिस प्रकार से समझेगा उसी प्रकार की उसकी सामाजिक अस्मिताएँ बनेगीं। इन्हीं अस्मिताओं के आधार पर राज्य का राष्ट्रीय हित संरचित होगा।

संरचनावादी यथार्थवादियों द्वारा अराजकता को दिये जाने वाले महत्त्व को पूरी तरह से दृष्टिओझल नहीं करते किन्तु उनका मत है कि अराजकता स्वयं में महत्त्वपूर्ण नहीं हो सकती है। सम्बन्धों की अराजकता दो मित्र राज्यों के बीच भी हो सकती है और दो शत्रु राज्यों के मध्य भी। दोनों का तात्पर्य भिन्न-भिन्न होगा। इस दृष्टिकोण से अराजकता नहीं वरन् उसके प्रभाव में बन सकने वाले सामाजिक सम्बन्धों की किस्में ही महत्त्वपूर्ण हो सकती हैं। इन अनेक प्रकार के सामाजिक सम्बन्धों के अनुसार ही राज्य अपने हितों को परिभाषित करते हैं; जैसे कि शीत युद्ध के काल में अमेरिका एवं सोवियत संघ के मध्य सम्बन्ध भी एक सामाजिक सम्बन्ध था जिसके अंतर्गत वे दोनों एक-दूसरे को शत्रु की भांति देखते थे और उसी के अनुसार उनके राष्ट्रीय हितों की संरचना होती थी। जब उन्होंने एक दूसरे को उस सामाजिक सम्बन्ध के आइने में देखना बंद कर दिया तो उस प्रकार के सामाजिक सम्बन्धों की परिस्थितियाँ ही नहीं रह गयीं तो उसके परिणामस्वरूप शीत-युद्ध भी समाप्त हो गया।

इससे स्पष्ट है कि रचनात्मकतावाद एक व्याख्यात्मक सिद्धान्त के तौर पर अपनी उपयोगिता बहुत अधिक स्पष्ट नहीं कर पाया है। इसके बावजूद उसे एक सैद्धान्तिक ढाँचा प्रस्तुत करने में सफलता अवश्य मिली है। रचनात्मकतावाद के प्रचलित होने के पीछे यथार्थवादी एवं आदर्शवादी दृष्टिकोणों की अपर्याप्ताओं की भूमिका भी रही है।

रचनात्मकतावाद का मूल्यांकन

(Evaluation of Constructivism)

रचनात्मकतावाद अथवा सामाजिक रचनात्मकतावाद नव उदारवादी एवं नव यथार्थवादी अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के सिद्धान्तों के प्रभुत्व के समुख एक चुनौती के रूप में उभरा है। **माइकल बार्नेट** के मतानुसार रचनावादी अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के सिद्धान्त को इस रूप में समझा जाता है कि विचार कैसे अन्तर्राष्ट्रीय संरचना को परिभाषित करते हैं, यह संरचना कैसे राज्यों के हितों एवं पहचान को परिभाषित करती है और राज्य एवं गैर राज्य अभिनेता इस संरचना को कैसे पुनः प्रस्तुत करते हैं। रचनात्मकतावाद के प्रमुख सिद्धान्तकार यह मानते हैं कि "अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति प्रेरक विचारों, सामूहिक मूल्यों, संस्कृति एवं सामाजिक पहचान द्वारा निर्मित होती है।" रचनात्मकतावादियों का तर्क है कि अंतर्राष्ट्रीय वास्तविकता सामाजिक रूप से ज्ञानात्मक अथवा बौद्धिक संरचनाओं (जो कि भौतिक दुनिया को अर्थ देती हैं) के द्वारा निर्मित होती है। यह

Scanned with CamScanner

सिद्धान्त अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के सिद्धान्तों की वैज्ञानिक विधि एवं अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति के उत्पादन में सिद्धान्तों की भूमिका को ध्यान में रखकर एक बहस के रूप में उभरा है। एमेन्युल एडलर के मतानुसार 'रचनात्मकतावाद' तर्कवादी एवं व्याख्यात्मक अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के सिद्धान्तों में एक मध्य मार्ग है।

Scanned with CamScanner